eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

अमेठी जनपद में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं और किंवदंतियों तथा मिथकों का महत्व

डॉ. वर्षा रानी[1] एवं डॉ. ब्रजेश सिंह[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुसाफिरखाना, अमेठी।

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुसाफिरखाना, अमेठी।

Abstract

भारत गांवों का देश है। इसके प्रत्येक प्रांत में ग्रामीण जीवन के विविध रंगों का सहज समावेश है। यहां के सांस्कृतिक वैविध्य के लिए प्रचलित कहावत है – 'कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी'। भारत का कोना कोना विविधता के सौन्दर्य से विभूषित है। अतः भारतवर्ष में ग्रामीण पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। भारत के सर्वाधिक वैविध्य से भरा राज्य है– उत्तर प्रदेश। यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, लघु उद्योगों, हस्तशिल्प, कारीगरी, धार्मिक–सांस्कृतिक स्थलों और ऐतिहासिक धरोहरों के बीच प्रचलित लोक मान्यताएं और किंवदंतियों से रसासिक्त वर्णन शैली पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं। उत्तर प्रदेश के बहुप्रतिष्ठित पौराणिक महत्व के जनपद अयोध्या के समीपस्थ ही अमेठी नामक जनपद स्थित है। यहां सुप्रसिद्ध जगदीशपुर नामक विकसित औद्योगिक क्षेत्र है, कोरवा नामक स्थान पर इंडो–रूस राइफल्स प्राइवेट लिमिटेड की एक राइफल निर्माण सुविधा है। इसकी मुसाफिरखाना नामक तहसील में कादूनाला नामक ऐतिहासिक शौर्यस्थल और 'मूंज' की खेती तथा इससे निर्मित उत्पाद विशेष प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में अमेठी जनपद के ग्रामीण स्थलों की पर्यटन की दृष्टि से संभावनाओं और प्रचलित किंवदंतियों से आकर्षण के केन्द्र के रूप में विकसित करने के प्रयासों का विश्लेषण किया गया है।

शब्द संक्षेप– अमेठी जनपद, ग्रामीण जीवन, ग्रामीण पर्यटन, संभावनाएं, किंवदंतियां, मिथक

Introduction

संस्कृत में पर्यटन का अर्थ है– विश्राम और ज्ञान की खोज के लिए घर बार छोड़कर यात्रा करना। यह परि और अटन से मिलकर बना है। परि का अर्थ है चारों ओर और अटन का अर्थ है– घूमना। अतः पर्यटन का शाब्दिक अर्थ है – चारों ओर घूमना। यह अंग्रेजी शब्द टूरिज्म का हिन्दी पर्याय है। टूर लैटिन शब्द टार्नस से लिया गया है, जिसका अर्थ है– 'वृत्त बनाने का एक उपकरण'। वृत्त बनाना भी घुमाना ही है । अतः पुनः टूरिज्म का अर्थ है – घूमना। इन्हीं अर्थों में पर्यटन की सामान्य परिभाषा इस प्रकार दी गई है– अपने निवास स्थल से मनोरंजन तथा खाली समय में मानसिक आनंद के उद्देश्य से दूसरे स्थलों का भ्रमण करना और एक निश्चित समय के उपरांत पुनः वापस लौट आना पर्यटन कहलाता है।

विश्व व्यापार संगठन (1993) के अनुसार 'पर्यटन में उन व्यक्तियों की गतिविधियों को शामिल किया जाता है, जो अवकाश, व्यवसाय और अन्य उद्देश्यों से लगातार एक वर्ष से अधिक समय तक अपने सामान्य वातावरण से बाहर यात्रा करते रहते हैं। 1963 में पर्यटन पर रोम सम्मेलन में पर्यटन को इस

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

प्रकार परिभाषित किया गया था–'वह गतिविधि जिसमें यात्री कम से कम 24 घंटे के लिए मनोरंजन, परिवार के साथ आनंद के क्षण बिताने, व्यापार, किसी प्रयोजन या बैठक आदि में प्रतिभागिता आदि उद्देश्य से आवागमन करता है पर्यटन कहा जाता है।' ("The activity of temporary visitors staying at least 24 hours for leisure, business, family, mission or meeting.")

1976 में द टूरिज्म सोसायटी ऑफ ब्रिटेन द्वारा पर्यटन का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए कहा गया – 'पर्यटन एक अंशकालिक, अल्पावधि की वह यात्रा है जो लोगों द्वारा अपने सामान्य निवास स्थान या कार्यस्थल से अन्यत्र स्थानों के लिए की जाती है और वे उस स्थान पर सैर सपाटे के लिए दर्शनीय स्थानों का भ्रमण करते हैं।'

1981 में AISTE ने इस परिभाषा में संशोधन करते हुए यह स्थापना दी कि 'पर्यटन को एक ऐसी सुनिश्चित गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो घर के वातावरण से बाहर अन्यत्र स्वेच्छा से योजना बनाकर की जाती हैं।' पर्यटन में रात्रि निवास किया भी जा सकता है और नहीं भी। इस प्रकार पर्यटन को बृहत् रूप में आमोद प्रमोद की सभी गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया गया है। अतः पर्यटन एक बहुउद्देशीय यात्रा है, जिसमें मनोरंजन अथवा आनंद के क्षण मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। उद्देश्यों, पर्यटन स्थलों की विशेषताओं, दूरी आदि के आधार पर पर्यटन अनेक प्रकार के बताए गए हैं। पर्यटन को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है– घरेलू पर्यटन और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन । यात्री की प्राथमिक प्रेरणा तथा यात्रा के दौरान की जाने वाली गतिविधियों के आधार पर इकोटूरिज्म या जियोटूरिज्म, एग्रोटूरिज्म, विरासत पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, स्पोर्ट्स पर्यटन आदि में विभाजित किया गया है। ग्रामीण पर्यटन को इन्हीं में से इकोटूरिज्म का एक रूप माना जाता है।

घरेलू पर्यटन के प्रकारों में स्थान विशेष के आधार पर शहरी पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन दो वर्ग हैं। यहां ग्रामीण पर्यटन को विशेष संदर्भित करते हुए परिभाषित करना अभीष्ट है। वस्तुतः ग्रामीण पर्यटन पर्यटन का वह रूप है, जिसमें पर्यटक और स्थानीय लोगों दोनों को समान रूप से अनेक लाभ मिलते हैं। ग्रामीण पर्यटन में विभिन्न ग्रामीण गंतव्य स्थलों को लोकप्रिय बनाने के लिए पर्यटन करना और यात्रा की व्यवस्था करना सम्मिलित है। ग्रामीण पर्यटन के कुछ प्रमुख लाभों को निम्नलिखित बिन्दुओं में देखा जा सकता है––

1. पर्यटक प्रकृति के स्वच्छ, स्वस्थ और मूल सौन्दर्य से आत्मिक और शारीरिक आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है।
2. वह प्रकृति और कृषि से जुड़े उत्पादों और सेवाओं का अनुभव करता है।
3. वह लोक जीवन से जुड़ाव महसूस करता है।
4. वह क्षेत्र विशेष की परंपराओं और संस्कृतियों से परिचित होता है।
5. यदि वह घरेलू पर्यटन या देशीय पर्यटन कर रहा है तो अपनी सांस्कृतिक धरोहरों और परंपराओं, घरेलू उत्पादों पर गर्व का अनुभव कर आह्लादित होता है।
6. यदि वह विदेशी पर्यटक है तो ग्रामीण सुषमा, सहज जीवन और सांस्कृतिक पहलुओं से परिचित होकर अचंभित, चमत्कृत और मुग्धता का अनुभव करता है।
7. ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक बदलाव का लाभ मिलता है।

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

8. स्थानीय उत्पादों और सेवाओं को अपने मूल स्थान पर ही बढ़ावा, वैश्विक पहचान और आर्थिक लाभ मिल जाता है। उन्हें उत्पादों और सेवाओं को सुदूर क्षेत्रों में ले जाने की आर्थिक, सामाजिक और शारीरिक हानि नहीं से राहत मिल जाती है।

उपरोक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त भी ग्रामीण पर्यटन के अनेक प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष लाभ हैं।

उद्देश्य– प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के अमेठी जनपद के लोक जीवन में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं का विश्लेषण तथा पर्यटन के क्षेत्र में किंवदंतियों और मिथकों के महत्व को रूपायित करना है।

मुख्य बिन्दु– ग्रामीण पर्यटन, अमेठी जनपद के दर्शनीय स्थल, प्रसिद्ध किंवदंतियां और मिथक, लघु उद्योग, हस्तशिल्प, मूंज के उत्पाद, औद्योगिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक स्थल।

विषय विस्तार –

उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में ग्रामीण पर्यटन के अवसर उपलब्ध हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण जनपद है–अमेठी। अमेठी जनपद की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार यहां 2329.11 वर्ग कि.मी. में 04 तहसील–अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना और तिलोई में लगभग 995 गांव हैं। अमेठी उत्तर प्रदेश का 72 वां जिला है, जिसे बीएसपी सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर 1 जुलाई 2010 को अस्तित्व में लाया गया, किन्तु अमेठी रियासत का इतिहास 1000 वर्ष से भी पुराना है।

किसी भी क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने में उस स्थान विशेष की प्राचीनता, पौराणिक, ऐतिहासिक या राजनैतिक महत्व से जुड़े तथ्य और प्रचलित किंवदंतियां सर्वप्रथम आकर्षित करते हैं। यथा 'अमेठी जनपद का इतिहास 1000 वर्षों से भी पुराना है' यह मान्यता सर्वप्रथम लौकिक और मौखिक किंवदंति है तत्पश्चात इतिहासकारों और पुरातत्वविदों द्वारा इसकी प्रमाणिकता की जांच की गई। मुख्य बात यह है कि मात्र इतना कहना ही कि अमेठी रियासत का इतिहास 1000 वर्षों से पुराना है उसे आकर्षण के केन्द्र में ले आता है और पर्यटक (जो इतिहासकार या पुरातत्ववेत्ता भी हो सकते हैं), ऐसे प्राचीन स्थल के भ्रमण की योजना बना लेता है। अमेठी जनपद में ऐसे अनेक दर्शनीय स्थल, कृषि, शिल्प और औद्योगिक केन्द्र हैं जिनसे अमेठी में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं विकसित हो रही हैं साथ ही यहां के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थलों से जुड़ी कहानियां इनके प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं।

अमेठी का इतिहास– इतिहासकारों के अनुसार 966 ई. में राजा सोढ़ द्वारा बनाई गई यह रियासत अस्तित्व में आई और 1007 ई. तक उनका शासन रहा। यह रियासत तुर्कों के समय बसाई गई थी। कहा जाता है कि इस रियासत पर तुर्कों, मुगलों और अंग्रेजों ने कई बार हमले किए किंतु रियासत ने अपनी गरिमा खोने नहीं दी। अंग्रेजों ने तो इस रियासत को अपने में विलय करने की भी कोशिश की किन्तु यहां के वीर भाले सुल्तानियों ने उन्हें सफल नहीं होने दिया।

सन् 1842 तक यहां के राजा महाराज विश्वेश्वर बख्श सिंह थे। उनकी मृत्यु हो जाने के कारण उनकी धर्म पत्नी ने राजा के मृत शरीर को अपनी गोद में रखकर खुद को सती कर लिया था। तभी से मान्यता है कि हर गुरुवार को क्षेत्र की महिलाएं सती महारानी के मंदिर जाकर दुरदुरिया का आयोजन कर अपने

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

सुहागिन रहने का आशीर्वाद मांगती हैं। राजा विश्वेश्वर के बाद यहां के राजा लाल माधव सिंह बने। जिन्होंने 1891 ई तक इस रियासत पर राज किया। उनकी मृत्यु के बाद राजा भगवान बख्श सिंह को रियासत का महाराज घोषित किया गया। राजा भगवान बख्श सिंह की चार संतान हुईं। इनमें रणंजय सिंह, रणवीर सिंह, जंग बहादुर सिंह और कुंवड साब शामिल हैं। इनमें से तीन पुत्रों की मृत्यु हो जाने के बाद रणंजय सिंह अमेठी के राजा बने। इनकी कोई संतान न होने के कारण इन्होंने संजय सिंह को गोद लिया जो वर्तमान में अमेठी की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

अमेठी के प्रमुख दर्शनीय/पर्यटन स्थल–

क. औद्योगिक स्थल

1. **जगदीशपुर** – अमेठी जिले का जगदीशपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 56 पर स्थित है। यह लखनऊ से पूर्व में 85 कि.मी. और सुल्तानपुर से 50 कि.मी. दूर है। यह एक विकसित औद्योगिक क्षेत्र है। यहां भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, इंडोगल्फ फर्टिलाइजर और स्टील अथॉरटी ऑफ इंडिया लिमिटेड जैसे बड़े उद्योग स्थल हैं। बीएचइएल भारत से इंजीनियरिंग उत्पादों और सेवाओं के बड़े निर्यातकों में से है। इंडोगल्फ फर्टिलाइजर्स को वर्ष 2022 में आदित्य बिड़ला समूह द्वारा अधिगृहीत किया गया जिसके कारण अब यह इंडोरामा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के नाम से जाना जाता है। यह भारत में फॉस्फेटिक और यूरिया उर्वरकों का अग्रणी निर्माता है। यह भारत के तीसरे सबसे बड़े उर्वरक निजी उत्पादक के रूप में स्थापित है। यह जगदीशपुर में शक्तिमान ब्रांड नाम से यूरिया उर्वरक का निर्माण करता है, जिसका प्रयोग गंगा के मैदानी इलाकों में किसानों द्वारा व्यापक रूप से किया जाता है।
   फैक्ट्री में यूरिया निर्माण की प्रक्रिया – यूरिया की गुणवत्ता के मानकों को ध्यान में रखते हुए फैक्ट्री में यूरिया के निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण की जाती है। फैक्ट्री में यूरिया का निर्माण अमोनिया और कार्बन डाई आक्साइड की प्रतिक्रिया से होता है। यूरिया बनाने के लिए अमोनिया और कार्बन डाई आक्साइड को स्टेनलेस स्टील वाले रिएक्टर में प्रतिक्रिया कराई जाती है। इस प्रक्रिया में यूटीआई कुल तापपुनर्चक्रण प्रक्रिया की तकनीक प्रयोग की जाती है। इसमें 215 से 220किग्रा/सेमी2जी दबाव पर प्रतिक्रिया कराई जाती है। इस प्रक्रिया में उच्च दक्षता वाले रिएक्टर में लगभग 76% कार्बन डाई आक्साइड का यूरिया में रूपांतरण होता है। यूरिया के निर्माण में अमोनिया और कार्बन डाई आक्साइड दो चरणों में प्रतिक्रिया करते हैं। पहले चरण में अमोनिया और कार्बन डाई आक्साइड अमोनियम कार्बामेट बनाते हैं। दूसरे चरण में अमोनियम कार्बामेट टूटकर यूरिया बनाता है। यूरिया को नाइट्रोजन युक्त उर्वरक के रूप में प्रयोग करने के लिए इसे सांद्रित और दानेदार बनाया जाता है। यूरिया एक कार्बनिक यौगिक है जिसका रासायनिक सूत्र $(NH_2)2CO$ होता है। इसे कार्बामाइड भी कहा जाता है। यूरिया बनाने का सारांश समीकरण है– $2NH_3 + CO_2 + H_2O \rightarrow (NH_2)2CO + 2H_2O$.
2. **कोरवा**– अमेठी जिले के कोरवा नामक स्थान में इंडो–रूस राइफल्स प्राइवेट लिमिटेड की एक राइफल निर्माण फैक्ट्री स्थापित है। यहां कलाश्निकोव परिवार के एके–200 संस्करण की राइफलें निर्मित की जाती हैं। इस फैक्ट्री की स्थापना 2019 में हुई थी। यह भारत और रूस के संयुक्त

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

उद्यम से बनी अंतरराष्ट्रीय महत्व की फैक्ट्री है। यहां एके–203 असॉल्ट राइफल का उत्पादन किया जाता है जो कलाश्निकोव सीरीज की सबसे एडवांस राइफल है।

ख. कृषि क्षेत्र–

अमेठी जनपद का प्रमुख कृषि उत्पाद मूंज है। मूंज प्राकृतिक रूप से बारहमास उगने वाली घास है, जिसे स्थानीय भाषा में सरपत के नाम से भी जाना जाता है। यह घास जनपद के निचले भू–भागों में पाई जाती है।यहां के स्थानीय लोग मूंज का प्रयोग विभिन्न घरेलू उत्पादों यथा– पावदान, थैले, स्टूल, रस्सी, पेन स्टैण्ड, कुर्सियां, मेज इत्यादि को बनाने में करते हैं। वे इन उत्पादों को बनाने में किसी आधुनिक तकनीक का सहारा भी नहीं लेते। सबसे खास बात कि यह पर्यावरण के सर्वथा अनुकूल है। यहां के शिल्पकारों का एक बड़ा समूह मूंज की रस्सियां बनाता है।

ग. धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल–

1. **मुसाफिरखाना– ग्रामीण** पर्यटन की दृष्टि से यह अमेठी जनपद का महत्वपूर्ण स्थल है। यहां के ग्राम गुन्नौर के पास महादेव का अति **प्राचीन मंदिर नारद मुनि धाम** है। कहा जाता है कि इस मंदिर में गुप्त शिवलिंग की स्थापना नारद मुनि ने अपने हाथ से की थी। इसके समीप ही कादूनाला है, जो कयादु का अपभ्रंश है। हिरण्यकश्यपु की पत्नी का नाम कयादु था और माना जाता है कि प्रह्लाद का जन्म यहीं पर हुआ था। इस किंवदंती के आधार पर मुसाफिर खाना को पौराणिक महत्व के पात्र प्रह्लाद की जन्मस्थली के रूप में माना जाता है। यह मान्यता इसके पर्यटनात्मक महत्व का संवर्धन करती है।
2. **हिंगलाज माता मंदिर –** मुसाफिरखाना से 5 कि.मी. उत्तर दिशा की ओर दादरा गांव स्थित यह प्राचीन मंदिर अमेठी जनपद के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इससे जुड़ी लोक कथा है कि वर्षों पूर्व बाबा पुरुषोत्तम दास ने अपनी कठोर तपस्या से मां हिंगलाज को प्रसन्न किया और हिंगल पर्वत (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) से लाकर दादरा गांव के पश्चिम दिशा में स्थापित किया। कहा जाता है कि जो भी इस मंदिर में सच्चे मन से माता की आराधना करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं। पास में ही स्थित हनुमान जी के परम भक्त खाकी बाबा का मंदिर व पुरुषोत्तम दास बाबा का मंदिर भी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र है।
3. **बाबा नंद महर –** यह भगवान श्री कृष्ण की स्मृति में यादवों द्वारा बनावाया गया मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि भगवान श्री कृष्ण बचपन में यहां आए थे। यह मंदिर राजा बलि और पवारिया के लिए प्रसिद्ध है। यहां हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को एक बड़ा और लोकप्रिय मेला लगता है। यहां आस पास के जिलों से बड़ी संख्या में जनसमूह एकत्रित होता है।

   किंवदंति– बाबा नंदमहर के धाम के संदर्भ में न तो कोई ऐतिहासिक तथ्य है और न पौराणिक आख्यान। केवल मान्यताओं के आधार पर आस्थावान यहां जुटते हैं। नगाड़ों की थाप, आसमान छूते झंडे, आठ प्रकार की जयकार द्वारा राजा बलि और पवरिया महाराज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन विशेष आकर्षण उत्पन्न करते हैं। बड़े बुजुर्गों के अनुसार बाबा नंद ने श्रीकृष्ण और बलराम जी के साथ श्रीराम के दर्शनार्थ अयोध्या धाम जाते समय यहीं पर रुककर विश्राम किया था।

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

4. **दण्डेश्वर बाबा** – जगदीशपुर ब्लाक के कोछित गांव में दण्डेश्वर बाबा (शिव के रूप) का मंदिर स्थापित है। यहां शिवरात्रि के समय एक दिन तथा अधिमास के अवसर पर 1 माह तक मेले का आयोजन होता है। ऐसी मान्यता है कि यह मंदिर भगवान वाराह (विष्णु के रूप) के समय से अस्तित्व में है। यहां का प्राचीन राम जानकी मंदिर और स्वेत वाराह मंदिर विशंष चर्चित है। नारा गांव के स्वेत वाराह स्थान पर थसाल में दो बार राम नवमी तथा कार्तिक मास के पूर्णिमा को विशाल मेले का आयोजन होता है।
5. **जायसी की मजार** – यह मजार अमेठी जनपद के जायस नगर में स्थित है। इसकी दूरी अमेठी के राजा के वर्तमान महल से करीब तीन चौथाई मील की दूरी पर स्थित है। मलिक मोहम्मद जायसी मध्यकाल के एक महान सूफी कवि और पीर थे। वे अमेठी के राजा के दरबारी कवि थे। जायसी जी ने फारसी नस्तालिक लिपि और स्थानीय अवधी भाषा में अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की जिसमें अवधी में रचित पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। इनमें पद्मावत नामक महाकाव्य का हिन्दी साहित्य में स्वर्णिम महत्व है। जायसी जी की मृत्यु के बाद उनकी इच्छानुसार उन्हें रामनगर में दफनाया गया। यहां जायसी जी का मकबरा देखने दूर दराज के लोग आते हैं।
6. **रायपुर फुलवारी का किला–** अमेठी का ऐतिहासिक नाम रायपुर अमेठी था। अमेठी के बंधलागोती कछवाहा राजा मूल रूप से रायपुर फुलवारी में रहते थे, जो सरवनपुर और कटरा हिम्मत सिंह के साथ तीन गांवों में से एक था, जिसे बाद में रायपुर–अमेठी के आधुनिक शहर में मिला दिया गया। रायपुर फुलवारी के पुराने किले को सफदर जंग ने 1743 के आसपास नष्ट कर दिया था। इसके खंडहर आज भी दिखाई देते हैं।

इसके विनाश के पीछे की **कहानी** इस प्रकार है– अमेठी के राजा राजा गुरुदत्त सिंह ने सफदर जंग के अधिकार को इतनी स्पष्ट रूप से चुनौती दी थी कि सफदर जंग ने किले को घेरने के लिए व्यक्तिगत रूप से एक सेना का नेतृत्व करते हुए रायपुर की ओर कूच किया था। 18 दिनों की घेराबंदी के बाद, गुरदत्त सिंह रामनगर के पड़ोसी जंगल में भाग गए (जो राजाओं का मुख्य निवास बन गया), और किले को नष्ट कर दिया गया और उनकी संपत्ति (तब अवध के ब्रिटिश कब्जे तक उदियावान के रूप में जाना जाता था) को सफदर जंग के सीधे नियंत्रण में रखा गया। राजा गुरदत्त सिंह के बेटे राजा दृगपाल सिंह अपने पिता की संपत्ति वापस पाने में सफल रहे। दृगपाल सिंह से शुरू होने वाले उनके सभी उत्तराधिकारियों को स्पष्ट रूप से राजा कहा जाता था। परगने में बंजर ऊसर भूमि की व्यापकता के कारण, एक लोकप्रिय कहावत थी **'गर न होता अमेठी ऊसर, राजा होता देवता दुसर'**, जिसका अर्थ है यदि अमेठी में कोई ऊसर नहीं होता , तो राजा दूसरा देवता होता'। इसके बाद तालुका को दृगपाल सिंह के दो बेटों के बीच विभाजित किया गया, जिसमें हर चंद सिंह को विरासत का बड़ा हिस्सा मिला और जय चंद सिंह ने कन्नू कसरावां की छोटी शाखा की स्थापना की। हर चंद सिंह को मूल रूप से 153 गांव विरासत में मिले थे, लेकिन 1804 में उन्हें अमेठी के पूरे परगना (राधीपुर गांव को छोड़कर) के लिए सगाई करने की अनुमति दी गई थी। 1810 में, इस व्यवस्था को सआदत अली खान द्वितीय ने बदल दिया, जिससे हर चंद सिंह के पास सिर्फ 43 लगान–मुक्त गांव बचे। उन्होंने अपने बेटे दलपत साह के पक्ष में त्यागपत्र दे

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

दिया, जो 1813 में तालुका को अपनी मूल सीमा तक बहाल करने में सक्षम थे। दलपत साह की 1815 में मृत्यु हो गई और उनके बेटे बिशेषर सिंह ने उनका स्थान लिया, जिनकी 1842 में निःसंतान मृत्यु हो गई। इस समय, तालुका बिशेषर सिंह के चचेरे भाई माधो सिंह को विरासत में मिला, जिनके पिता अर्जुन सिंह (दलपत के भाई) ने स्वतंत्र गंगोली एस्टेट को जूनियर शाखा के रूप में रखा था। माधो सिंह के अधीन, ये दोनों शाखाएँ एक हो गईं। 1845 में माधो सिंह का सुल्तानपुर के नाजिम महाराजा मान सिंह से टकराव हुआ। जब यह अनिर्णायक साबित हुआ, तो दोनों पक्षों ने बातचीत की ओर रुख किया। 1846 में हुए समझौते के अनुसार कुछ गांवों को छोड़कर पूरा परगना माधो सिंह को पट्टे पर दे दिया गया। इस पट्टे में कन्नू कसरावन भी शामिल था, जो अभी भी जयचंद सिंह के वंशजों के पास था, लेकिन मालिकों ने शर्तों की अनदेखी की और माधो सिंह को अवध के नवाब से जब्ती का आदेश मिल गया । लंबी लड़ाई के बाद मालिकों ने आखिरकार 1853 में आत्मसमर्पण कर दिया। 1856 में ब्रिटिश कब्जे के बाद उदियावन तालुका लगभग पूरी तरह से टूट गया था, लेकिन 1857 के विद्रोह के बाद इसका पुनर्गठन किया गया । माधो सिंह ने विद्रोह का समर्थन किया लेकिन अंग्रेज अभी भी उन्हें संपत्ति के लिए सनद देने को तैयार थे। उन्होंने औपचारिक रूप से उनके राजा की उपाधि को भी स्वीकार किया (उन्होंने वास्तव में पहले कभी औपचारिक मान्यता नहीं मांगी थी)। माधो की मृत्यु अगस्त 1891 में हुई। 20वीं सदी के अंत में, अमेठी संपत्ति में 314 गाँव और 4 पट्टियाँ शामिल थीं, जो सभी अमेठी के परगना में थीं।

रायपुर वह स्थान है जहाँ बंधलागोती राजाओं का पहला किला स्थित था। उनके पूर्वज रायपुर में रहा करते थे, जो अब रायपुर फुलवारी है। नया किला वर्तमान अमेठी से लगभग 6 किमी (3.7 मील) उत्तर में राम नगर में बनाया गया था, जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र था।

घ. इको पर्यटन केन्द्र

1. **कादूनाला –** मुसाफिरखाना में स्थित ऋषि मुनियों की तपस्थली और स्वतंत्रता संग्राम की गौरव गाथा के किस्सों से स्थानीय ख्यातिप्राप्त कादूनाला का घना जंगल इको पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है। इसे कादूनाला वेटलैंड एवं इको पर्यटन स्थल के रूप में पहचाना जाएगा। इसे पर्यटन विभाग द्वारा लगभग डेढ़ करोड़ की लागत से विकसित किया जा रहा है।

   कादूनाला से जुड़े मिथक और मान्यताएं – यह जंगल देश की आजादी की शौर्य गाथा बयां करता है। यहां 7 मार्च 1858 को अंग्रेजों के खिलाफ कादूनाला युद्ध हुआ था। इस युद्ध में यहां के सैनिक जिन्हें भाले सुल्तानी कहा जाता है ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये। इस युद्ध में कोहरा के तालुकदार बाबू भूप सिंह ने भी अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ हिस्सा लिया था। इस युद्ध के बाद कादूनाला के पास एक कुआं ऐसा रह गया जो कटे सिरों से भरा हुआ था। इसी जंगल में भाले सुल्तानियों सहित सर्व समाज के लोगों ने अपना बलिदान दिया था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार के सदस्य अवधेश कुमार सिंह के अनुसार यह शहीद स्मारक ही नहीं पृथ्वी का प्रथम तीर्थ भी है । 1857 के युद्ध में यहां कई बार अंग्रेजी हुकूमत को परास्त किया गया। यहां के प्रसिद्ध योद्धा भाले सुल्तानियों के वीरता के संबंध में यह किंवदंति भी प्रचलित है कि ये प्रतापी राजा महाराणा प्रताप के वंशज हैं।

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

2. **गढ़ामाफी का जंगल–** गौरीगंज से सुल्तानपुर रोड पर लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित माधोपुर गांव से उत्तर की ओर प्रायः दो कि.मी की दूरी पर गढ़ामाफी का सुप्रसिद्ध जंगल है। लगभग 35 बीघे क्षेत्रफल में फैले जंगल में पूर्वोत्तर किनारे पर 17वीं शताब्दी के भर राजाओं के किले का अवशेष मौजूद है। इस किले से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों की अभी तक कोई पुष्ट जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। किले के उत्तर, पश्चिम और पूरब में स्थित गहरी खाइयों के निशान यह साबित करते हैं कि दुश्मनों से किले की सुरक्षा के लिए इन खाइयों में पानी भरा जाता रहा होगा।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध पत्र में अन्वेषित उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अमेठी जनपद अनेक दृष्टिकोणों से ग्रामीण पर्यटन हेतु सर्वथा उपयुक्त स्थान है। यहां पर्यटन की अनेकशः संभावनाएं परिलक्षित हैं। यहां के प्रसिद्ध स्थलों से जुड़ी किंवदंतियां, मिथक और ऐतिहासिक–पौराणिक गाथाएं इसके पर्यटन की संभावनाओं को विशेष महत्व प्रदान करते हैं।

संदर्भ सूची–

1. भाटिया, ए.के., टूरिज्म डेवलपमेण्ट प्रिंसिपल्स एण्ड प्रैक्टिसेज।
2. जे. नेगी, ट्रैवेल एजेन्सी एण्ड टूर आपरेशन : कान्सेप्ट एण्ड प्रिंसिपल्स, कनिष्का पब्लिशर, नई दिल्ली, 2004।
3. सेठ, प्रेमनाथ, सक्सेजफुल टूरिज्म मैनेजमेण्टः फण्डामण्टल्स ऑफ टूरिज्म, स्टरलिंग्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2008।
4. एस. अलमेलमंगइ, इंट्रोडक्शन टू टूरिज्म, डायरेक्ट्रेट ऑफ डिस्टेंस एण्ड कॉण्टिन्यूइंग एजूकेशननेलवेली, तमिलनाडू।
5- https://igntu.ac.in/e-content/tourismhindi.pdf
6- https://amethi.nic.in
7- https://odopup.in
8- https://en.wikipedia.org/wiki/Amethi
9. हिंदुस्तान (हिन्दी में)। 8 मार्च 2024। ई–पेपर।
10. दैनिक भास्कर (हिन्दी में)। 14 अगस्त 2024। ई–पेपर।